This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No.....

5689

Concurrent Course for Hons. Prog. C

(Language Credit Course)

SANSKRIT LANGUAGE

(Admissions of 2005 and after)

Time : 2 Hours *Maximum Marks : 50*

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

टिप्पणी :—अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत **या** हिन्दी **या** अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए; परन्तु सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए ।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। यथानिर्देश उत्तर दीजिए।

Attempt *All* questions. Do as directed.

1. संस्कृत में अनुवाद कीजिए : 9

Translate in Sanskrit :

(*i*) राजा ब्राह्मण को गाय देता है।

(*ii*) मनुष्य के जीवन में अकर्मण्यता नहीं होनी चाहिए।

(*iii*) केवल दूसरों से खाने वाले पापी होते हैं।

P.T.O.

(*iv*) उत्तम स्वभाव वाले काम शुरू करके उसे पूरा करते हैं।

(*v*) सज्जनों की वाणी में सत्य होता है।

(*vi*) विद्या यश और सुख दोनों देती है।

2. निम्नलिखित शब्दों से संस्कृत में वाक्य बनाइये : 5

Make sentences in Sanskrit of the following words :

आगत्य, अलं, सह, खादन्, उत्थाय।

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए : 4

Correct the following sentences :

(*i*) दुर्जनं मूर्खः विश्वसिति।

(*ii*) याचकः पादात् खञ्जः अस्ति।

(*iii*) वृक्षाणां फलानि परार्थे भवति।

(*iv*) गृहं पृष्ठतः वृक्षः अस्ति।

4. रघुवंशम् (प्रथम सर्ग) के आधार पर वसिष्ठ के आश्रम के मार्ग का वर्णन कीजिए। 10

Describe the path towards the आश्रम of वसिष्ठ according to रघुवंशम् Canto I.

अथवा

(*Or*)

कालिदास ने राजा दिलीप का चरित्र कैसा प्रदर्शित किया है ?

What type of character of दिलीप is illustrated by कालिदास ?

5. नाटककार के रूप में भास की शैली प्रस्तुत कीजिए। 10

Present the style of Bhasa as a playwright.

अथवा

(*Or*)

भरत के विषाद को अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

Explain the dejection of भरत.

6. निम्नलिखित श्लोकों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए : 6+6

Explain with reference to context of the following verses :

(*i*) आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।

आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः॥

अथवा

(Or)

मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्।

प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः॥

(*ii*) यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दया

स्वजननिभृतः सर्वोऽप्येवं मृदुः परिभूयते।

अथ न रुचितं मुञ्च त्वं मामहं कृतनिश्चयो

युवतिरहितं लोकं कर्तुं यतश्छलिता वयम्॥

अथवा

(Or)

कुतः क्रोधो विनीतानां लज्जा वा कृतचेतसाम्।

मया दृष्टं तु तच्छून्यं तैर्विहीनं तपोवनम्॥